Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्यप्रदेश के धार जिले में ग्रामीण महिला साक्षरता का वितरण प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. किरण मण्डलोई*

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़नगर, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – किसी भी देश के समग्र विकास के निर्धारक घटकों में प्रमुख घटक साक्षरता है। देश के बहुआयामी विकास हेतु प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, परन्तु अभी भी देश के समग्र विकास हेतु आवश्यक कुशल एवं प्रशिक्षित जनशक्ति का अभाव है। किसी भी देश का समान व वर्ग का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास करना है तो समाज की आधी आबादी अर्थात् महिलाएं जो कि विकास की मुख्य धारा में नहीं हैं उन्हें शिक्षित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

भारत जैसे विकासशील देशों में आज भी ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों की महिलाओं में साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत न्यून है। प्रस्तुत अध्ययन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में प्राचीन समय से ही महिला शिक्षा का अभाव रहा है। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बावजूद विभिन्न जातियों एवं वर्गों में विभक्त समाज में साक्षरता उसकी अपनी विशेषताओं द्वारा निर्धारित होती है। जिन समाजों में महिलाओं को परिसंचरण की स्वतंत्रता है या नहीं है, किन्तु उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है उन समाजों में महिला साक्षरता के प्रति प्रतिकूल प्रभाव हैं।

शब्द कुंजी –साक्षरता, बहुआयामी, संसाधन, आदिवासी, आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना – किसी भी देश-प्रदेश के विकास को परखने का सर्वोत्तम उपाय वहां की महिलाओं की शिक्षा से आंकलन लगाया जा सकता है। महिलाएं परिवार रूपी गाड़ी की धुरी हैं। महिलाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक है क्योंकि वे ही परिवार को शिक्षित करती हैं। इसलिए गाँधीजी ने कहा था कि 'एक लड़की कि शिक्षा एक लड़के से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है परंतु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित होता है।' शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, पथ-प्रदर्शक, है निर्माण है एवं विकास है।

भारत के विकास में महिला साक्षरता का बहुत बड़ा योगदान है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि पिछले कुछ दशकों से ज्यों-ज्यों महिला साक्षरता में वृद्धि होती गई है, वैसे-वैसे भारत विकास के प्रत्येक पथ पर अग्रसर हुआ है। जो व्यक्ति समझकर पढ़ना-लिखना एवं हस्ताक्षर करना जानते हैं, साक्षर कहे जाते हैं। असाक्षरता, व्यक्ति एवं समाज दोनों के विकास में बाधक हैं। स्वामी विवेकानंद के अनुसार- 'केवल पुस्तकीय ज्ञान से काम नहीं चलेगा। हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिससे कि व्यक्ति अपने स्वयं के पैरों पर खड़ा हो सकता है।'

साहित्य समीक्षा :

1. **त्यागी गुरसरनदास एवं विजय कुमार (2009) : 'उदीयमान भारत में शिक्षा'–** किसी भी व्यक्ति समाज तथा देश के समग्र विकास में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विकास के निर्धारक घटकों में प्रमुख घटक साक्षरता है। 'साक्षरता वास्तव में न तो पढ़ाई-लिखाई है और न ही कोई विशेष योग्यता। साक्षरता पढ़ने-लिखने की मनोदशा का एक यंत्र है।'

2. **डॉ. दीपारानी (2019) : 'उत्तराखण्ड के जनपद टिहरी में जनसंख्या का प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन'–** साक्षरता मानव प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करती है और ज्ञान अनंतिम शक्ति है। साक्षरता और शिक्षा को सामान्यत: सामाजिक विकास के संकेतकों के तौर पर देखा जाता है।

3. **गजराज नेगी एवं विजय बहुगुणा (2019) : 'साक्षरता का स्थानिक वितरण प्रतिरूप – उत्तराखण्ड राज्य के गैरसैण विकासखण्ड (जनपद चमोली) के संदर्भ में : एक भौगोलिक अध्ययन'–** शोध क्षेत्र में भौगोलिक जटिलताओं के अध्ययन के कारण शिक्षा के स्तर में पर्याप्त लैंगिक साक्षरता अंतराल दृष्टिगोचर होता है।

4. **डॉ. जियालाल राठौड (2024) : 'जनजाति क्षेत्र का साक्षरता परिदृश्य एवं सामाजिक परिवर्तन शहडोल संभाग के विशेष संदर्भ में'–** शोध पत्र में महिला एवं पुरुष साक्षरता का अध्ययन किया है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा भी रोटी, कपड़ा और मकान आदि की तरह मूलभूत आवश्यकता बनती जा रही है।

श्रीमती हंसा मेहता समिति (1962), कोठारी कमीशन (1964-66), नारी शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1980) शिक्षा की चुनौतियां : नीतिगत परिप्रेक्ष्य, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार (1986), राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1987-88), राममूर्ति समिति रिपोर्ट (1990), जनार्दन रेड्डी समिति (1992) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) आदि विभिन्न नीतियों/समितियों के माध्यम से महिलाओं में शिक्षा के सही विकास और राष्ट्रीयजीवन में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला है।

अध्ययन क्षेत्र :

अध्ययन क्षेत्र पश्चिमी मध्यप्रदेश का आदिवासी बाहुल्य जिला है। इस जिले का धरातल भौगोलिक संरचना की दृष्टि से बहुत ही असमान है। जिले के उत्तर में मालवा का पठार, मध्य भाग पर्वतीय (विंध्याचल पर्वत श्रेणी) तथा दक्षिण में नर्मदा घाटी व निमाड़ का मैदान है। अध्ययन क्षेत्र की भौगालिक स्थिति मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग में 22°43' से 23°10' उत्तरी अक्षांश एवं 74°28' से 75°42' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए वहां के भौतिक एवं आर्थिक संसाधन बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। शिक्षा भी इन्हीं ससाधनों के अभाव के कारण पिछड़ जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन में विन्ध्य पर्वत एवं नर्मदा नदी के मध्य वनाच्छादित भू-आकृतिक रूप से विषम एवं पिछड़े भागों में स्थित आदिवासी बाहुल्य जिला धार (म.प्र.) की महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता को जानने का प्रयास किया गया है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक शोध आंकड़ों का संकलन विभिन्न प्रकाशित जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, जनगणना पुस्तिका गजेटियर (2011) तथा अन्य पुस्तकों एवं पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से किया गया है। अध्ययन को रुचिकर एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए विभिन्न तालिकाओं, आरेखों एवं मानचित्र का प्रयोग किया गया है।

महिला साक्षरता का वितरण : भारत में भी विश्व के अन्य देशों की साक्षरता का प्रादेशिक वितरण असमान है। इसी प्रकार धार जिले में भी महिला साक्षरता का वितरण असमान पाया गया है। आर्थिक दृष्टि से उन्नत क्षेत्रों में साक्षरता सामान्य से अधिक एवं पिछड़े क्षेत्रों में कम पाई जाती है। किसी भी देश में साक्षरता का मापदण्ड प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद का उच्च होना ही नहीं है अपितु शिक्षा के लिए प्रति व्यक्ति आय उच्च होने के साथ-साथ वहां का सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं प्राकृतिक वातावरण भी उच्च होना चाहिए।

धार जिले में जनसंख्या का असमान वितरण है। जिले की कुल जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार 2185793 व्यक्ति है, जिसमें पुरुष 1112725 एवं महिला 1073068 है। जिले की कुल जनसंख्या में से ग्रामीण जनसंख्या 1772572 व्यक्ति है। कुल ग्रामीण जनसंख्या में से पुरुष 895113 एवं महिलाएं 877459 हैं।

धार जिले की कुल साक्षरता 2011 के अनुसार 59 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 68.95 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 48.77 प्रतिशत है। जिले में कुल 08 तहसीलें (बदनावर, कुक्षी, मनावर, सरदारपुर, गंधवानी, धरमपुरी एवं डही) तथा 13 विकासखण्ड हैं। इन विकासखण्डों में 1477 आबाद ग्राम हैं जिनका अध्ययन इस प्रकार है।

तालिका क्रमांक 01 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि धार जिले की विकासखण्डों में से धार विकासखण्ड में सबसे अधिक महिलाएं साक्षर (45.40 प्रतिशत) हैं। इसका कारण इस विकासखण्ड के धार मुख्यालय के समीप होने के कारण यातायात एवं शिक्षा की व्यापक सुविधाएं उपलब्ध हैं। धार विकासखण्ड मालवा पठार पर कृषि एवं उद्योग के कारण स्त्रियों को अधिक स्वतंत्रता तथा प्रतिष्ठा मिली हुई है। इसी प्रकार सबसे कम साक्षर महिलाएं 24.80 प्रतिशत एवं सबसे अधिक असाक्षर महिलाएं 75.20 प्रतिशत बाग विकासखण्ड में है। इसका मुख्य कारण है, इन दुर्गम पर्वतीय व वनीय क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक पिछड़ेपन की जनसंख्या का एक बड़ा भाग भूमिहीन, पिछड़ी तथा अनुसूचित जाति, जनजातियों में रूढ़िवादी समाजों में स्त्री साक्षरता पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश ग्रामीण अधिवास ऐसे हैं जहां यातायात, विद्यालयों तथा पर्याप्त शिक्षकों की सुविधाओं का न होना एवं महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी है।

तालिका क्रमांक 02 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका क्रमांक 02 से स्पष्ट है कि धार जिले की कुल 08 तहसील के 13 विकासखण्ड में कुल 1535 ग्राम निर्धारित हैं। उनमें से निवासरहित ग्राम 58 तथा निवासित ग्राम 1477 हैं। शोध अध्ययन में 1477 ग्रामों को शामिल किया गया है।

धार जिले में ग्रामवार महिला साक्षरता के वितरण को पांच भागों में बांटा गया है। (1) जिले में अति उच्च साक्षरता (80 से अधिक) 8 ग्रामों में अर्थात सबसे कम 0.54 प्रतिशत पाई गई है। (2) उच्च साक्षरता (60-80 प्रतिशत) 88 ग्रामों में अर्थात 5.96 प्रतिशत। (3) मध्यम साक्षरता (40-60 प्रतिशत) 636 ग्रामों अर्थात 43.06 प्रतिशत (4) निम्न साक्षरता (20-40 प्रतिशत) 624 ग्रामों में अर्थात 42.25 प्रतिशत (5) जिले में अति निम्न साक्षरता (0-20 प्रतिशत) 121 ग्रामों में अर्थात 8.19 प्रतिशत ग्रामों में ही पाई गई है।

महिला साक्षरता के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

1) भौगालिक कारक 2) आर्थिक कारक 3) सामाजिक करक
4) सांस्कृतिक कारक 5) राजनीतिक कारक

महिला साक्षरता में वृद्धि – मध्यप्रदेश सरकार ने समाज के सभी वर्गों की महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा एवं कल्याण की दृष्टि से विभिन्न योजनाएं लागू की गई, जैसे लाड़ली लक्ष्मी योजना, सर्वशिक्षा अभियान, बालिका शिक्षा, कन्या साक्षरता प्रोत्साहन, मुख्यमंत्री साइकिल योजना, गांव की बेटी एवं आधुनिक यंत्र लेपटॉप एवं स्कूटी आदि योजनाओं के माध्यम से जिले में महिला साक्षरता में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष – जिला धार आदिवासी जनजातीय क्षेत्र में अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, गरीबी, अज्ञानता एवं निजी उदासीनता के कारण उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बनी हुई है कि वे शिक्षा के महत्व को कम समझते हैं। ऐसे लोगों को समझाना ही होगा कि उच्च शिक्षा ही नहीं बल्कि साक्षरता भी उनके निजी एवं व्यावसायिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। संक्षेप में कह सकते हैं कि साक्षरता की सार्थकता महिलाओं की शिक्षा एवं स्वरोजगार में रुचि से मानव प्रतिष्ठा में वृद्धि करके राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है। वर्तमान में जिले की महिलाओं में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन देखने को मिलता है। खासकर बालिकाओं/महिलाओं की शिक्षा/साक्षरता उन्हें छोटे परिवार के प्रति जागरूक बनाती है। वे विवाह भी जल्दी नहीं करती हैं तथा परिवार को शिक्षित एवं नियोजित हेतु सचेत रहती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पण्डा बी.पी. (2004) : 'जनसंख्या भूगोल', मध्यप्रदेशस हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. त्यागी गुरसरनदास एवं विजय कुमार (2009) : 'उदीयमान भारत में शिक्षा', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
3. कुमार प्रमिला एवं शर्मा श्रीकमल (2015) : 'मध्यप्रदेश : एक भौगोलिक अध्ययन', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
4. डॉ. दीपारानी (2019) : 'उत्तराखण्ड के जनपद टिहरी में जनसंख्या

का प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन' ISSN: 2249-894x, UGC APPROVED JOURNAL No. 48514, Vol.-8, May - 2019.
5. ब्रजेश कुमार पाण्डेय (2019) : 'जनसंख्या की साक्षरता एवं व्यावसायिक संरचना की विशेषताएं' ISSN: 2347-2944, 2582-2454, Vol.-11, Dec - 2019.
6. डॉ. जियालाल राठौर (2024) : 'जनजाति क्षेत्र का साक्षरता परिदृश्य एवं सामाजिक परिवर्तन : शहडोल संभाग के विशेष सन्दर्भ में' ISSN: 2249-894x, Vol.-14, Dec - 2024.

तालिका क्रमांक 01: जिला धार : विकासखण्डवार महिला साक्षरता 2011 (प्रतिशत में)

महिला साक्षरता	विकासखण्ड												
	बदनावर	सरदारपुर	तिरला	धार	नालछा	गंधवानी	बाग	कुक्षी	डही	निसरपुर	मनावर	बाकानेर	धरमपुरी
साक्षर	43	31.40	33.60	45.40	37.90	29.50	24.80	34	30.40	42	38.90	40.90	41.70
निरक्षर	57	68.60	66.40	54.60	62.10	70.50	75.20	66	69.60	58	61.10	59.10	58.30

स्त्रोत : सर्वे ऑफ इंडिया (2011)

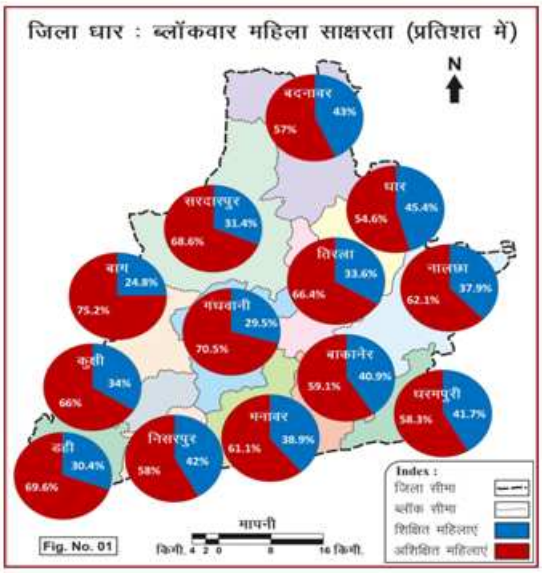

तालिका क्रमांक 02: जिला धार : विकासखण्डवार ग्रामीण महिला साक्षरता का वितरण प्रतिरूप (प्रतिशत)

क्र.	विकासखण्ड का नाम	साक्षरता वितरण एवं ग्रामों की संख्या					ग्रामों की संख्या
		0-20	20-40	40-60	60-80	80 से अधिक	
1	बदनावर	03	48	87	25	02	165
2	सरदारपुर	32	102	53	04	00	191
3	तिरला	13	79	43	10	00	145
4	धार	01	11	73	11	01	97
5	नालछा	20	73	74	11	02	180
6	गंधवानी	21	90	31	03	00	145
7	बाग	18	56	45	01	00	90
8	कुक्षी	05	20	21	01	00	47
9	डही	03	44	14	00	00	61
10	निसरपुर	03	12	38	03	01	57
11	मनावर	01	26	65	02	01	95
12	बाकानेर	01	25	70	07	00	103
13	धरमपुरी	02	36	51	11	01	101
	योग	**121**	**624**	**636**	**88**	**08**	**1477**

स्त्रोत : सर्वे ऑफ इंडिया (2011) एवं शोधार्थी एवं परिकलित।